कथा सरिता

रचनात्मकता

एक व्यापारी की पत्नी की असमय मृत्यु हो गई। उसका बेटा छोटा और शरारती था, इसलिए उसे घर पर अकेला नहीं छोड़ा जा सकता था। वह रोज़ व्यापारी के साथ उसकी दुकान पर आने लगा। जो भी ग्राहक आते, वह उनकी पगड़ी या टोपी उतारकर फेंक देता था। व्यापारी उसे बहुत मना करता, किंतु वह बाज नहीं आता। व्यापारी बहुत परेशान हो गया। एक दिन उसके शहर में एक महात्माजी आए। वह उनके पास गया और अपनी समस्या उनके सामने रखी। महात्माजी बोले - मैं तुम्हारे बेटे को सुधार दूंगा, किंतु शर्त यह है कि तुम बेटे के कामों में कोई रोक-टोक नहीं करोगे। व्यापारी सहमत हो गया। अगले दिन महात्मा सिर पर साफा बांधकर दुकान पर आए। जैसे ही वे आकर बैठे, बालक ने उनका साफा उतारकर सड़क पर फेंक दिया। महात्मा ने ताली बजाते हुए कहा - शाबास बेटे, अब ज़रा दौड़कर साफे को उठा लाओ और मेरे सिर पर बांध दो। बालक गया और साफा लाकर उल्टा-सीधा उनके सिर पर लपेट दिया।

दूसरे दिन महात्मा फिर साफा बांधकर दुकान पर आए। दुकान पर आने के पहले वे सामने एक लकड़ी का गट्ठर और छोटी कुल्हाड़ी रख आए थे। बालक उनका साफा उतारकर फेंकता, इससे पहले ही उन्होंने कहा - बेटा, उस कुल्हाड़ी से ज़रा लकड़ियों के छोटे-छोटे टुकड़े कर दो। लड़के ने खुशी-खुशी वह काम कर दिया। इस प्रकार महात्मा ने आठ दिन तक उससे कोई न कोई काम करवाया और लड़के ने प्रसन्न होकर किया। अब उसकी साफा उतारने की आदत भी छूट चुकी थी। व्यापारी ने महात्माजी से कहा - आपने तो मेरे बेटे पर जादू कर दिया। तब महात्मा बोले - हम लोग दिनभर बच्चों से बीसियों बार कहते हैं - यह मत करो, वह मत करो, लेकिन एक बार भी यह नहीं कहते कि यह करो। बच्चे हमें काम करते हुए देखते हैं, तो वे भी चाहता हैं कि हम भी कुछ काम करें। बच्चे की इस इच्छा को समझकर ही उससे कुछ न कुछ काम करवाया जाए। व्यापारी ने अपनी भूल समझ ली।

स्व की आहट, ना करो मुझे आहत...

पेज 2 का शेष ...

की सेवा में लगेगा, वह नुकसान ही करेगा दूसरों का, क्योंकि जिसको अभी खुद का ही हित पता नहीं है, उसे दूसरे का हित पता नहीं हो सकता। आत्म-प्रवेश हुए बिना सेवक होने का मतलब है कि आप कोई न कोई मिसचीफ, कोई न कोई शरारत पैदा करोगे। यह दुनिया शरारतियों से कम परेशान है, शुभ इच्छाओं से ज्यादा परेशान है। वे ऐसा ऐसा इलाज कर देते हैं शुभ इच्छा से, कि उनके पास आपको जाना पड़ता है, वे नर्क में ले जायें तो भी जाना पड़ता है, क्योंकि इतनी शुभेच्छा से ले जा रहे हैं, इतने भले मन से ले जा रहे हैं, इतना कष्ट उठा रहे हैं आपके लिए कि आप मना भी नहीं कर सकते हैं कि क्यों नर्क की तरफ घसीट रहे हो! इन्कार भी करना अशोभनीय लगता है, क्योंकि बिचारा आपकी कितनी सेवा कर रहा है!

सेवा का हक केवल उसे उपलब्ध होता है जो ध्यान की गहराई में पहुंच गया है, जिसे स्वयं के हित का ज्ञान है, उससे पहले सेवा का कोई हक नहीं। क्योंकि जब तक आपको आनंद नहीं मिला है, तब तक आप आनंद दे नहीं सकते। आप दु:ख ही दे सकते हो। नाम तो आप कुछ भी रखो, किसी भी प्रकार की सेवा का नाम दो, लेकिन आनंद है आपके भीतर, तो वो आनंद दूसरों में भी प्रवाहित हो सकता है।

''तभी आप उसकी समस्त शक्तियों का उपयोग कर सकोगे और उन्हें किसी योग्य सेवा में लगा सकोगे, उससे पहले नहीं। जब तक आपको स्वयं कुछ निश्चय नहीं हो जाता, आपके लिए दूसरों की सहायता करना असंभव है''।

कभी हम हवाई यात्रा में सफर करते हैं तो वहाँ एयरहोस्टेस सूचना देती है कि जब भी विमान ऊँचाई पर हो, ऑक्सीज़न की कमी हो तो पहेल ऑक्सीज़न का मास्क स्वयं पहनें फिर दूसरों की सहायता करें। क्योंकि व्यक्ति जब खुद स्वस्थ होगा तभी तो दूसरों की सहायता कर सकेगा। जब सेवा करने की हमारी इच्छा है, तो स्वयं का हित भी जिसको पता हो वही तो हितैसी बन सकेगा।

बहाना

अक्सर असफल लोग एक भयानक बीमारी से पीड़ित होते हैं। इस बीमारी को अपेंडिसाइटिस की तर्ज पर बहानासाइटिस का नाम दिया जा सकता है। हर असफल व्यक्ति में यह बीमारी बहुत विकसित अवस्था में पाई जाती है और आम आदमियों में भी यह थोड़ी-बहुत तो होती ही है। सफलता की सीढ़ियों पर कभी न रुकने वाला व्यक्ति बहानासाइटिस का रोगी नहीं होता, जबकि असफलता की ढ़लान पर फिसलने वाला इस बीमारी से गंभीर रूप से पीड़ित होता है। अपने आसपास के लोगों को देखने पर आप पाएंगे कि जो आदमी जितना सफल होता है, वह उतने ही कम बहाने बनाता है, परंतु जो कहीं नहीं पहुंच पाता और उसके पास आगे पहुंचने की कोई योजना भी नहीं होती, उसके पास ही बहाने थोक में मौजूद रहते हैं। मैं जितने बेहद सफल व्यक्तियों से मिला हूँ उनके सामने बहानों की कोई कमी नहीं थी - रूजवेल्ट अपने बेजान पैरों का बहाना बना सकते थे, कैनेडी यह कह सकते थे 'प्रेसिडेंट बनते वक्त मेरी उम्र कम थी', जॉनसन और आइजनहॉवर हार्ट अटैक के बहाने बना सकते थे। बहानासाइटिस का अगर वक्त पर सही इलाज नहीं किया जाए, तो स्थिति बिगड़ सकती है। विचारों की इस बीमारी का शिकार आदमी इस तरह से सोचता है -'मेरी हालत उतनी अच्छी नहीं है जितनी कि होनी चाहिए। अब मैं लोगों के सामने अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए कौन-सा बहाना बना सकता हूँ? जब किसी 'अच्छे बहाने' को चुन लेता है, तो फिर वह इसे कसकर जकड़ लेता है। जब हम उनमें दोहराव की खाद डालते हैं तो विचार, चाहे वे सकरात्मक हों या नकारात्मक, तेजी से फलने-फूलने लगते हैं। शुरुआत में तो बहानासाइटिस का रोगी जानता है कि उसका बहाना कमोबेश झूठ है, परंतु जितनी बार वह अपने बहाने को दोहराता है, उतना ही उसे यह सच लगने लगता है। बहानासाइटिस या बहाने बनाने जैसी बीमारी इंसान को ज़िंदगी भर सफल नहीं होने देती।

स्वर्ग और नर्क

यदि संयम, प्रेम और परमार्थ जैसे उदात्त भावों की खाद हृदय रूपी खेत में निरंतर डलती रहे, तो यही जीवन स्वर्ग बनने में देर नहीं लगेगी।

एक राजा अपने राज्य के कुछ लोगों से उनके किन्हीं विचारों की वजह से चिढ़ता था। वह चाहता था कि वे भी उसी की तरह सोचें और वह जो कहता है, वैसा ही करें। किंतु स्वतंत्र मत के हिमायती इन लोगों ने विनम्र दृढ़ता से इस बात के लिए इंकार कर दिया। सो उस राजा ने बदला लेने के उद्देश्य से इन लोगों को ऐसे द्वीप पर निर्वासित कर दिया, जिसे 'नर्क' की उपमा दी जाती थी। वहां अत्यधिक गंदगी थी। हर ओर कचरे का ढ़ेर, बदबू छोड़ती नालियां, तपती रेत थी और हरियाली का नामो-निशान तक नहीं। राजा ने सोचा कि ऐसे अस्वास्थ्यकर माहौल में ये सभी लोग शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जाएंगे। उसने अपने सैनिकों के द्वारा इन लोगों को उस द्वीप पर छुड़वा दिया। कई वर्ष बीत गए। एक दिन राजा को ख्याल आया कि देखें उन लोगों का क्या हश्र हुआ? किंतु जब राजा वहां पहुंचा, तो अचरज में पड़ गया। उसकी कल्पना के सर्वथा विपरीत द्वीप में प्रवेश करते ही एक शानदार उद्यान दिखा, जिसमें रंग-बिरंगे व सुगंधित पुष्प लगे हुए थे। गंदगी व बदबू का कहीं नामो-निशान न था। सभी ओर स्वच्छता, सुगंध और हरियाली थी। राजा को ऐसा लगा कि वह किसी स्वर्ग में आ गया है।

थोड़ा आगे बढ़ने पर उसने वहां उन व्यक्तियों को देखा, जिन्हें मरने के लिए उसने यहां भेजा था। राजा ने उनसे पूछा - क्या यह वही नर्क द्वीप है? उन लोगों ने कहा - हां राजन्, यह वही नर्कद्वीप है। अचंभित राजा ने पुन: प्रश्न किया - आखिर इसकी वे सारी चीज़ें कहां गई, जो इसे नर्क बनाती थीं? वे सभी लोग हंसकर बोले - महाराज, जब हम यहां आए, तो हमने सबसे पहले कचरे के ढ़ेर हटाए और नालियों की सफाई कर ज़मीन खोदी। फिर उसमें गोबर डाला, जो खाद बन गया। कुछ समय बाद ही यहां हरियाली लहराने लगी। हम लगातार सिंचाई व समुचित देखभाल करते रहे, जिससे इस नर्कद्वीप को स्वर्गद्वीप बनने में देर नहीं लगी। राजा अति प्रसन्न हुआ और उसने उन सभी से हार्दिक क्षमा मांगी।

बुदनी-होशंगाबाद। चैतन्य नौ देवियों की झाँकी के समक्ष दीप प्रज्वलित करते हुए मध्य प्रदेश के मा. मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।

विश्रामपुर-(छ.ग.)। चैतन्य देवियों की झाँकी में उदघाटन के बाद परमात्म स्मृति में कलेक्टर जी.आर.चुरेन्द्र, ब्र.कु.पार्वती, ब्र.कु.मंजू व अन्य।

वनखेड़ी-पचमढ़ी। नौ देवियों की झाँकी की आरती उतारते हुए जिला पंचायत अध्यक्षा योजना गन्धा, ब्र.कु.संध्या, ब्र.कु.रूपा एवं प्रतिष्ठित जनसमूह।

कुशीनगर-गोरखपुर। विश्व महापरिवर्तन आध्यात्मिक मेले में दीप प्रज्वलित करते हुए कुंवर रानी मोहिनी देवी, ब्र.कु. सुरेन्द्र, ब्र.कु. कंचन, ब्र.कु.मीरा तथा अन्य।

रीवा। '7 अरब सत्कर्मों की महायोजना' का भव्य शुभारंभ करने के पश्चात् जिला कलेक्टर राहुल जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सावित्री तथा ब्र.कु. निर्मला।

राजगढ़। विश्व-बंधुत्व दिवस का उद्घाटन करते हुए अतिथी फादर अनिस, सेलेंद्र जी,लायन्स क्लब, ब्र.कु. मधु, मोना सुस्तानी व अन्य।